

# शहतूत/तुती



अधिक जानकारी के लिए संपर्क:  
82 7373 3030/82 7373 3535

**फल का नाम:** शहतूत/तुती

**वैज्ञानिक नाम:** मोरस अल्बा

**कुल:** मोरेसी

**रोपण दिनांक:** 11/07/2023

**दूरी/अंतर:** 6x2 फीट, पौधे से पौधे तक और लाइन से लाइन की दूरी

**रोपण क्षेत्र:** 67 R

**पौधों की संख्या:** 4100

**आवश्यक दूरी:** 5x2x1, 6x2x1, फीट

**शहतूत के गुण:** कई देशों में रेशम उत्पादन बहुत महत्वपूर्ण उद्योग है। भारत और चीन रेशम के उत्पादन में विश्व के अग्रणी देश हैं, यह दोनों देश वैश्विक उत्पादन का लगभग 60% रेशम उत्पादन करते हैं। शहतूत की पत्तियों की खेती को मोरीकल्चर कहा जाता है, शहतूत की पत्तियां रेशम के कीड़ों का एकमात्र भोजन है। शहतूत के फल आयरन, विटामिन 'सी' और फैटी एसिड से भरपूर होते हैं।

**किस्म व्ही-1 की विशेषताएँ:** खड़ी शाखाएँ और भूरे रंग का तना। पत्तियां गहरे हरे रंग की, चिकनी और रसदार जिसमें नामी की मात्रा 75% होती हैं। पेड़ की शाखाएँ सीधी, बड़ी और मोटी शाखाओं से ढकी होती हैं। प्रोटीन से भरपूर। उच्च स्ट्रूनिंग क्षमता (दूरी फसल)।

**उपयुक्त मृदा:** शहतूत की खेती के लिए मध्यम गहरी उथली, अच्छी जल निकासी वाली, थोड़ी अम्लीय मिट्टी जिसका पीएच 6.5 -7 हो उपयुक्त होती है। अधिक ऊंचाई, लवणीय और क्षारीय तथा जल जमाव वाली मिट्टी का चयन नहीं करना चाहिए।

**जलवायु:** शहतूत की खेती के लिए गर्म और ठंडी दोनों जलवायु उपयुक्त है। बेहतर विकास के लिए आवश्यक इष्टतम तापमान 25-30 डिग्री सेल्सियस और 750-1000 मिलीलीटर तक वार्षिक वर्षा अनुकूल है। महाराष्ट्र की कृषि जलवायु स्थिति को ध्यान में रखते हुए यदि पानी की प्रचुर उपलब्धता हो तो पूरे वर्ष शहतूत की पत्तियों का उत्पादन संभव है।

**उत्पादन:** 60 टन/हेक्टेयर/वर्ष पत्तियाँ (20000 to 24000 किलो/ एकर/वर्ष पत्तियाँ)

**शहतूत के प्रमुख कीट:** पिंग मीली बग, थ्रिप्स, पत्ती घुमाणे वाली इल्ली

**शहतूत के प्रमुख रोग:** पत्तों के दाग, भुरभुरी (पाउडरी) फफूंद, पत्तों में जंग, जड़ों की सड़न